माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल 2018

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

(परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →)

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

स्टी... लाकर लगाये

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक A - 1088197

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

-	2	8	2	5	3	6	9	7	3

शब्दों में

-	दो	आठ	दो	पांच	तीन	छः	नौ	सात	तीन

नीचे दिये गये उदाहरण अनुरूप रोल नम्बर भरें।

उदाहरणार्थ	1	1	2	4	3	9	5	6	8
	एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

(केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे →)

क :- पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 1 शब्दों में एक

ख :- परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 09

ग :- परीक्षा का दिनांक 1 | 03 | 18

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

HSSC C.N.-252009

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
शीत जैन (हस्ताक्षर)	(हस्ताक्षर)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

(परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →)

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

Laser/Inkjet/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

3

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(1) का उत्तर

(1) कृष्ण को लेने

(2) भय में

(3) लालमणि

(4) पंत

(5) 31

प्रश्न-(2) का उत्तर

(अ) धरती

(ब) क्षणभंगुर

(स) अरबवें

(द) मातृभाषा

(इ) प्रबन्ध काव्य

B S E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECO

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(3) का उत्तर

(1) असत्य

(2) असत्य

(3) सत्य

(4) सत्य

(5) सत्य

B S E

प्रश्न-(4) का उत्तर

(अ) गजमुख का मुख (दस मुख) रावण देखता है।

(ब) रामनारायण उपाध्याय को लिखने के लिए एकान्त चाहिए।

(स) डॉ. रामकुमार वर्मा की माताजी का नाम राजरानी देवी था।

(द) रचना के आधार पर वाक्य तीन प्रकार के होते हैं।

(ई) रोला और उल्लाला के संयोग से छप्पय छन्द बनता है।

5 योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 5 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(5) का उत्तर

स्तम्भ "क"	स्तम्भ "ख" (उत्तर)
(1) मीरा के आराध्य	श्रीकृष्ण
(2) तापसी	उषा प्रियंवदा
(3) कंस आतंकित था	देवकी का व्योमातीत रूप
(4) गेय मुक्तक	मीरा पदावली
(5) माता - पिता	द्वन्द्व समास

B S E

प्रश्न -(6) का उत्तर

नाव में पानी भर जाने पर सयानों का कर्तव्य है कि दोनों हाथों से पानी को निकाल कर नाव को डूबने से बचाए।

प्रश्न -(7) का उत्तर

'पल्लव वसना' उस सूखी सी डाल को कहते हैं बसन्त के आते ही वस्त्रधारिणी बनेगी तथा जिसने शैलपुत्री के समान पत्ते खाना भी छोड़ दिया है तथा बसन्त के आगमन पर ही पल्लवों रूपी वस्त्र

6

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 6 के अंक =

प्रश्न क्र.

धारणा करेगी।

प्रश्न -(8) का उत्तर

'अरी सुहागिन' सम्बोधन विवाहित स्त्री के लिए किया गया है लेकिन संकेत पृथ्वी की ओर किया गया है।

प्रश्न-(9) का उत्तर (अथवा)

कृष्ण ने दही का दोना अपनी चोरी को छिपाने के लिए पीठ के पीछे छिपा लिया था।

प्रश्न -(10) का उत्तर (अथवा)

जब नवयुवक सहमकर साहस व विश्वास के साथ अपनी मंजिल की ओर आगे बढ़ता है तो ~~विघ्न~~, विघ्न बाधाएँ उसका मार्ग छोड़ देती हैं।

प्रश्न- (11) का उत्तर (अथवा)

द्वार खुलते ही लेखक को लगने लगा जैसा ताले के साथ उसकी यादें खुलती जा रही थी। जो उसके बचपन की थी।

B
S
E

7 ☐ + ☐ = ☐

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 7 के अंक | कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(12) का उत्तर (अथवा)

गजाधर बाबू रेलवे की नौकरी से पैंतीस वर्ष बाद रिटायर हुए थे।

प्रश्न-(13) का उत्तर

शरद जोशी जी के अनुसार अच्छे अध्यक्ष की कोई दो विशेषताएँ निम्नलि है –

(1) अध्यक्ष गम्भीर किस्म का प्राणी होता है या उसमे उसमें यह भ्रम बनाये रहने की क्षमता होती है कि वह गम्भीर है।

(2) अध्यक्ष महोदय सभा में हमेशा लेट आता है क्योंकि वह अपना अतिव्यस्त समय बताना चाहता है।

प्रश्न-(14) का उत्तर

उत्तराखण्ड का प्राकृतिक दृश्य बड़ा ही अनूठा है। यहां कि स्वच्छ जल समेटे कल-कल करती ~~नदियाँ~~ नदियाँ, वर्ष भर बर्फ से आच्छादित रहने वाली पर्वत (चोटीयाँ) पहाड़ियाँ, हरे भरे ~~वृक्ष~~ वन, स्वच्छ व शान्त वातावरण आदि के प्राकृतिक ~~दृश्य~~ दृश्य श्रद्धालुओं को आकर्षित करते हैं।

B S E

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 8 के अंक = कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(15) का उत्तर

वाक्य शुद्ध

(i) उसने मुझे कुछ नहीं कहा।

(ii) भवदीय / ~~आपका~~

प्रश्न-(16) का उत्तर (अथवा)

काव्य की परिभाषा

आचार्य विश्वनाथ के अनुसार

" रसात्मकं वाक्यम् काव्यं " अर्थात् रस युक्त ~~के~~ वाक्य ही काव्य है कहलाता है, काव्य के ~~मुख्य रूप~~ मुख्य रूप से दो भेद होते हैं —

(1) दृश्य काव्य (देखने योग्य)

(2) श्रव्य काव्य (सुनने योग्य)

BSE

9 पृष्ठ + पृष्ठ 9 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(17) का उत्तर (अथवा)

गणेशशंकर विद्यार्थीजी नाटे कद काठी के होते हुए भी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे।
उनके व्यक्तित्व की विशेषताएँ कुछ इस प्रकार है-

(1) साहित्यकार- यद्यपि गणेशंकर विद्यार्थी जी का राजनीति की ओर अधिक रुझान था परन्तु उनका हृदय सरस साहित्यकार था। विद्यार्थी जी की विलक्षण प्रतिभा के कारण ही प्रताप शीघ्र ही भारत का एक पत्रिका बन गयी।

(2) समाजवाद- गणेशशंकर विद्यार्थी जी पर समाजवाद का भी गहरा प्रभाव था। इसी कारण उन्होंने औद्योगिक नगर कानपुर के मजदूर दल की ओर उन मजदूरों के अधिकारों को प्राप्त कराने के लिए उन्होंने स्वयं संघर्ष किया। तथा निरन्तर संघर्ष में रत रहे।

(3) राष्ट्रवाद- गणेशशंकर विद्यार्थी जी पर राष्ट्रवाद का गहरा प्रभाव था। इसी कारण वे देशभक्तों के लिए धन मांगकर व अपना पेट काटकर उन्होंने आर्थिक सहायता प्रदान करते थे। इसी प्रकार उन्हीं दिनों प्रताप में

10

योग पूर्व पृष्ठ

प्रश्न क्र.

देशभक्ति विषयक लघु व दीर्घ कविताएँ प्रकाशित होती थी।

प्रश्न-(18) का उत्तर (अथवा)

राजभाषा — जिस प्रकार राष्ट्र भाषा देश के अन्य भाषा विभाषी राज्यों अर्थात् अन्य भाषा बोलने वालों के बीच सेतू का काम करती है। उसी प्रकार राजभाषा किसी राज्य के व्यक्तियों के बीच अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में सहायक होती है (यहाँ राज्य से तात्पर्य है कि जिस राज्य में जो राजभाषा होती है वह वहाँ के व्यक्तियों के मध्य सम्पर्क करने में सहायक होती है) राजभाषा में ही उस राज्य के सारे सरकारी कार्य किये जाते हैं।

राजभाषा की प्रमुख कोई तीन विशेषताएँ निं लि है —

(1) राजभाषा राज्य के व्यक्तियों के भावों के आदान-प्रदान करवाने में सहायक होती है।

(2) राजभाषा में ही राज्य के सभी सरकारी काम (करवाये जाते हैं) किये जाते है।

B
S
E

(11) [ ] + [ ]

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) किसी भाषा को राजभाषा बनाने से उसका महत्व बढ़ जाता है। सरकारी कर्मचारियों व राज्यवासियों के लिए राज्यभाषा का ज्ञान होना आवश्यक हो जाता है। उदाहरण – जैसे पंजाब राज्य की राज्यभाषा पंजाबी है महाराष्ट्र की मराठी भाषा है।

प्रश्न –(19) का उत्तर (अथवा)

यमक व श्लेष अंलकार में अन्तर निम्न है –

यमक	श्लेष
1) यमक अंलकार में, शब्दों की आवृत्ति बार होने पर उनका अर्थ भिन्न-भिन्न निकलता है।	1) श्लेष में एक ही शब्द का कई जगह अलग अर्थ निकलता है।
2) यमक अंलकार एक ही शब्द उत्पत्ति बार-बार तथा उसका अर्थ अलग अलग पाया जाता है।	2) श्लेष मे शब्दों मे एक ही शब्द भिन्न-भिन्न स्थानों भिन्न भिन्न अर्थ देता है।
3) उदा० – "कनक-कनक ते सौ गुनी मादकता अधिकाय या पाये बौराये जग पाये बौराये"।	3) उदा० – "रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून पानी गये न ऊभरे मोती मानुष चून"।

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - (20) का उत्तर

रिपोर्ताज - रिपोर्ताज से आशय है कि घटना का पूर्णतया: सच्चाई के साथ बड़ी सहजता, रोचकता व सजीवता के वर्णन करना ही रिपोर्ताज मैं कहलाता है।

सीधे अर्थों मैं किसी आँखो देखी घटना का पूर्ण सच्चाई के साथ सजीवता व सरलता से वर्णन करना ही रिपोर्ताज कहलाती है।

रिपोर्ताज की तीन विशेषताएँ निम्नलि है-

(1) रिपोर्ताज मे लेखक पूर्ण सच्चाई के साथ घटना का वर्णन करता है।

(2) रिपोर्ताज गद्य की सबसे रोचक विधा है। घटना विशेष का आँखो देखा वर्णन होता है।

(3) ~~रित~~ रिपोर्ताज मैं (सरलता) सहजता व सम्पूर्ण निष्ठा के साथ लेखक घटना का सजीवता से वर्णन करता है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - (21) का उत्तर

प्रयोगवाद की कोई दो विशेषताएं नि॰लि है -

(1) नवीन उपमानो - इस काल के कवियों ने ~~का प्रयोग~~ नए-नए उपमानों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है। वे मानते थे कि काव्य के पुराने उपमान अब ~~बासी~~ बासे पड़ चुके हैं।

(2) नारी के प्रति नवीन भावना -

इस काल के कवियों ने रीतिकालीन कवियों की तरह नारी को प्रेमपूर्ति का साधन न मानकर उसे सम्मानजनक स्थान दिया। इस काल के कवियों के अनुसार इस काल की नारी पार्थिव जगत की स्थूल नारी न होकर भाव जगत की सुकुमार नारी थी।

प्रयोगवाद के प्रमुख दो कवि नि॰लि है -

कवि	रचना
(1) अज्ञेय	(1) "हरी घास पर क्षण भर" (2) "इत्यलम्"
(2) ~~कु~~ मुक्तिबोध	~~(1) चाँद का मुख टेढ़ा~~ (1) "भूरी - भूरी खाक धूल"

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(22) का उत्तर

कवि परिचय - "सूरदास"

(अ) रचनायें - (1) "सूरसागर"
(2) "सूरसारावली"

(ब) भावपक्ष- आपके भावपक्ष की विशेषतायें निम्नलिखित है-

(1) भक्ति भावना - प्रभु श्रीकृष्ण की भक्ति मे लीन होकर आपने अपनी रचनाऐं की है। आपकी रचनाओं प्रभु श्रीकृष्ण के प्रति भक्ति भावना की झलक आपकी रचनाओं में मिलती है।

(2) रस सिद्धिता - आपकी रचनाओं में श्रृंगार वात्सल्य, शान्त रसों को प्रयोग बड़ी सहजता से देखने को मिलता है। आपकी रचनाओं मे रसों को भावों को व्यक्त करने के लिए समयानुसार प्रयोग किया गया है।

(3) प्रभु के प्रति सच्ची भावना - आपकी रचनाओं मे प्रभु के प्रति सच्ची भावना के दर्शन होते है।

B
S
E

15 [ ] + [ ] = [ ]
योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 15 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

कलापक्ष- आपके कलापक्ष की विशेषताएं निम्नलि है-

भाषा - आपकी भाषा ब्रजभाषा है आपने अपनी रचनाओं ब्रजभाषा भाषा तथा कहीं राजस्थानी व अवधी भाषा के शब्दों को भी प्रयोग अपनी मे किया है। आपकी मुख्य रूप से भाषा ब्रजभाषा ही है।

शैली- आपकी शैली गेपयात्मक पद शैली है।

अलंकार प्रधान- आपकी रचनाओं मे अलंकारो की उत्पत्ति ~~स्वतः~~ स्वयं ही हुई है। आपकी रचनाओं में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, रूपक अलंकार, उपमा अलंकारो का भी प्रयोग ~~किया~~ आपकी रचनाओ मे किया गया है।

छन्द प्रधान- आपकी रचनाओं में निर्ममता के साथ छन्दों का संगीतात्मकता के साथ प्रयोग किया गया है आपने वार्णिक व मात्रिक छन्दो का भी प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है।

साहित्य जगत मे स्थान - प्रभु की भक्ति मे लीन होकर आपने अपनी रचनाऐं की है। आपके रसों ~~के~~ के प्रयोग से चमत्कार पैदा होता है। रससिद्ध कवि के रूप मे आप सदैव स्मरणीय रहेगे।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न - 23 का उत्तर (अथवा)

लेखक परिचय - उषा प्रियंवदा

(अ) रचनाएँ - 1) "वापसी"
2) "जिन्दगी और गुलाब"

(ब) भाषा - आपकी भाषा शुद्ध साहित्यिक खड़ी बोली है। आपने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी, मराठी, अंग्रेजी भाषा के शब्दों के प्रयोग को करने के लिए आपने कभी भी हाथ पीछे नहीं किये हैं। आपकी भाषा तत्सम व तद्भव प्रधान है। आपने भाषा में रोचकता व चमत्कार पैदा करने के मुहावरों व लोक प्रचलित कहावतों का प्रयोग अपनी रचनाओं में किया है।

शैली - आपकी भाषा शैली नि०लि प्रकार की है -

1) भावात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग आपने भाव प्रधान स्थानों में किया है। जिससे भावों में सरलता आई है।

(2) वर्णात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग आपने निबन्धों, कहानियों

17 + =

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 17 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

तथा कठिन विषयो का वर्णन करने के लिए प्रयोग किया है।

(3) चित्रात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग कर आपने शब्दों को चित्रात्मक रूप प्रधान किया है।

(4) व्यंग्यात्मक शैली - इस शैली का प्रयोग कर आपने सामाजिक समस्याओं पर करारे व्यंग्य किये हैं।

(स) साहित्य जगत मे स्थान - साहित्य में सृजन करके आपने अपनी रचनाऐ लिखी। पारिवारिक समस्याओ मे तो आपको महारत प्राप्त थी। एक कुशल लेखिका के रूप मे आप सदैव हिन्दी जगत मैं जगमगाती रहेगी।

प्रश्न -(24) का उत्तर

संकेत - "भय" किसी आती ——— भय कहते है।"

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के अन्तर्गत "भय" नामक पाठ से अवतरित किया गया है जिसके लेखक "आचार्य रामचन्द्र शुक्लजी" है।

B S E

18 [ ] + [ ] = [ ]
पृष्ठ 18 के अंक   कुल अंक

SECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश गद्यांश में भय को परिभाषित व भय का विश्लेषण किया गया है।

व्याख्या – लेखक आचार्य चन्द्र रामचन्द्र शुक्लजी के अनुसार जब किसी आती हुई विपत्ति या दुःख के कारण जो आवेगपूर्ण स्तंभ मनोविकार या तेज गति से आते हुए मनोविकार को भय कहा जाता है। भय मे विपत्ति से दूर जाने की आशा होती है। भय मे सदैव डर बना रहता है।

B
S
E

विशेष – (1) भय का मनोविश्लेषण किया गया है।
(2) भाषा सरल व प्रवाहयुक्त है।
(3) भय के कारण होने वाले दुःख का भी वर्णन है।

प्रश्न-(25) का उत्तर (अथवा)

संकेत – "कबीर संगत _ _ _ _ _ चन्दन होय।"

सन्दर्भ – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक स्वाति के अन्तर्गत "अमृतवाणी" नामक कविता से अवतरित किया गया

19 [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 19 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

है जिसके कवि "कबीरदास जी" है।

प्रसंग – प्रस्तुत पंक्तियों मे कबीरजी ने संगति के प्रभाव को बताया है।

व्याख्या – कबीरदास जी कहते है कि संगत मनुष्य पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है जिस प्रकार संत या सज्जनों की संगत करने से वर्तमान व भविष्य दोनों भवसागर पार हो जाते हैं। जिसने साधु की संगति के महत्व को समझ लिया वह भवसागर से पार हो गया। जिस प्रकार चन्दन की सुगन्ध के कारण वन के सभी वृक्ष उसी की सुगन्ध मे रंग जाते है लेकिन कुसंगत व अपने स्वभाव को छोड़ने के कारण बाँस चन्दन की सुगन्ध को नही ग्रहण करता है व अपनी सुगन्ध को नहीं त्यागता है।

विशेष – (1) कबीरजी ने संगति के प्रभाव का बड़ा रोचक वर्णन किया है।

(2) बाँस का उदाहरण देकर समझने मे और सरलता आ गयी है।

(3) भाषा सधुक्कड़ी है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न -(26) का उत्तर

(क) शीर्षक – " सामाजिक प्राणी " ।

(ख) समाज से अलग मनुष्य की के अस्तित्व की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

(ग) मित्र एक ऐसा रिश्ता होता है जो गुरु, माता के स्थान की पूर्ति करता है।

B
S
E

प्रश्न -(28) का उत्तर (ब)

निबन्ध – " दीपावली "

बिन्दुरेख

(1) प्रस्तावना।
(2) दीपावली मनाने का कारण
(3) दीपावली का महत्व
(4) मनाये जाने का तरीका
(5) दीपावली का प्राचीन व नवीन रूप
(6) दीपावली से लाभ व हानियाँ
(7) उपसंहार

21

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(27) का उत्तर (अथवा)

सेवा में,
जिलाधीश महोदय,
ग्वालियर (म.प्र),

विषय- ध्वनि विस्तारक यन्त्र को बजाने पर प्रतिबन्ध हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

हम प्रेम नगर क्षेत्र के कक्षा 12 वीं के छात्र है। कुछ दिनों बाद हमारी वार्षिक परीक्षाऐं प्रारम्भ होने वाली है इसलिए हम अपनी पढ़ाई के ओर अधिक ~~मेहन~~ मेहनत कर रहे है लेकिन लाऊडस्पीकरो, डी.जे व ध्वनि विस्तारक यंत्रो के कर्णभेदी स्वर के कारण हमारी पढ़ाई मे व्यवधान उत्पन्न हो रहा है।

अतः आपसे अनुरोध कि हम सब छात्रों के भविष्य को देखकर परीक्षा तक ध्वनि विस्तारक यंत्रो पर रोक लगाने की कृपा करें।

धन्यवाद

प्रार्थी

दिनांक-10/1/16

अ, ब, स

योग पूर्व पृष्ठ	पृष्ठ 22 के अंक	कुल अंक

MADHYAPRADESH BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रश्न-(24) का उत्तर

निबन्ध - "जल का महत्व"

बिन्दुरेख -

(1) प्रस्तावना

(2) जल का मानव जीवन में महत्व

(3) जल का उपयोग
3.1) कृषि क्षेत्र में
3.2) उद्योग क्षेत्र में
3.3) सफाई म करने में
3.4) दैनिक उपयोग में

4) जल के प्रदूषण के कारण

5) जल के प्रदूषण को रोकने के उपाय

6) जल ~~के~~ की प्राणी जगत मे ~~महत्व~~ आवश्यकता

7) उपसंहार

BSE

23

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

॥ रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून,
पानी गये न उबरे मोती मानुष चून ॥

1) प्रस्तावना-

मानव व प्राणी तथा जीवजगत तथा वृक्षों का आधार भूमि ही जल ही है। जल मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उपयोगी है। जल मानव की आत्मा के समान ही है। जल का प्रदूषण आज-कल नगरीकरण व औद्योगिकीकरण के कारण बढ़ता जा रहा है। अतः हमें चाहिए कि हम जल को प्रदूषित होने से बचाये व अपने जीवन को सुरक्षित करें।

2) जल का मानव जीवन में महत्व - जैसा कि ऊपर दिये हुए अंकित से स्पष्ट होता है कि जल का मानव जीवन मे बहुत अधिक है। मानव के शरीर में लगभग 70-72% पानी की मात्रा होती है। जिससे हम समझ सकते है कि जल का प्राणी मात्र अर्थात मनुष्य के लिए कितना महत्व है।

(28)

(24)

प्रश्न क्र.

(3) जल का उपयोग -

जल का मनुष्य के हर क्षेत्र में ही उपयोग किया जाता है जिनमे से कुछ प्रमुख निम्नलि है -

3.1) कृषि क्षेत्र में -

भारत एक कृषि प्रधान है तथा यहाँ के लोगों के जीवकोपाजन का एक मात्र सहारा कृषि है। कृषि जल पर ही निर्भर है बिना जल के कृषि करना असंभव है। भारत कृषि के द्वारा विश्व 17.84% जनसंख्या का भरण पोषण करता है।

3.2) उद्योग क्षेत्र में -

जल का उद्योग क्षेत्र में भी वृहत महत्व है जैसे जूट उद्योग रेशों को गलाने के लिए जल की आवश्यकता होती है तथा गन्ना उद्योग में गन्ने की प्राप्ति कृषि से होती है जो जल पर निर्भर है उद्योगो प्राप्त होने वाला कृषि पर निर्भर है और कृषि जल निर्भर है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

4 पृष्ठीय 2018

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी	1 03 18

स्टीकर तीर के निशान से मिलाकर लगायें

उत्तर पुस्तिका का सरल क्रमांक C- 3244533

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में: – 2 8 2 5 3 6 9 7 3

शब्दों में: दो आठ दो पाँच तीन छः नौ सात

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा: H.S.S.C. C.N.-252008

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर: शील जैन

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.......... कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

इस प्रकार ... उद्योग व व्यापार व्यवस्था का आधार है।

3.3) साफ सफाई के क्षेत्र - जल का उपयोग साफ-सफाई के लिए भी प्रयुक्त किया जाता है जैसे घरों, उद्योगो की साफ-सफाई आदि में।

3.4) दैनिक उपयोग -

जल का दैनिक कार्यो मे भी उपयोग किया जाता है जैसे बर्तन धोने मे, कपडे धोने मे नहाने मे आदि मे जल का उपयोग किया जाता है

BSE

पृष्ठ के अंकों का योग

(4) जल के प्रदूषण के कारण

जल के प्रदूषण के कई कारण है जिनमें से कुछ प्रमुख निं.लि है -

(1) उद्योगों व फर्मो द्वारा रासायनिकों पदार्थो को तालाबो व नदियो मे छोड़ देना।

(2) जानवरों को तालाबो व नदियो मे नहाने से।

(3) जल मे अपशिष्ट पदार्थ जैसे मल-मूत्र के त्यागने से

(4) बेकार पड़े पदार्थो का जल मे मिलाने जल प्रदूषण होता है।

(5) जल प्रदूषण के उपाय

जल को प्रदूषण से बचाना ही जल संरक्षण कहलाता है जिसके उपाया नि.लि है -

(1) उद्योगों व फर्मो के जल मे रासायनिक पदार्थो के बहाने पर प्रतिबन्ध लगाना चाहिए।

(2) उधोगों में जानवरों को नहीं नहाना चाहिए।

(3) मल-मूत्र व अपशिष्ट पदार्थों को जल में नहीं त्यागना चाहिए।

(4) सरकारी प्रयास किये जाने चाहिए।

(5) ~~जाग~~ जन-जागरूकता को बढ़ाकर जल की आवश्यकता लोगों को बताना चाहिए।

(6) जल की ~~आवश्क~~ आवश्यकता

जल का मानव जीवन में बहुत अधिक महत्व है क्योंकि बिना जल मानव की नित प्रतिदिन की क्रियाऐं अवरुद्ध हो जायेगी।

खाना बनाना, नहाना, व दैनिक कार्य सभी बंद हो जायेंगे।

जिस प्रकार मानव के लिए आत्मा आवश्यक है वैसे ही मानव के जीवन में जल आवश्यक है।

(7) उपसंहार—

जल मानव के हर क्षेत्र मे उपयोगी है इसलिए संरक्षण किया जाना आवश्यक आज विश्व मे विवि विकासशील देशों मे प्रदूषण की सबसे ज्यादा समस्या है। जल प्रदूषण के कारण ही विकासशील देशों मे 80% रोग पैदा हो रहे। अतः आवश्यक की ऐसी तकनीक विकसित की जाये जिससे समुद्र के जल को शुद्ध कर मानव के लिए उपयोगी बनाना चाहिए।

अतः एक प्रसिद्ध है कि

"जल है तो कल है।"

"जल है तो जीवन है।"